इकाई → 3
"a"

वाणिज्य शिक्षण की विधियाँ →

वाणिज्य शिक्षण की विधियाँ, साज-सज्जा, उपागम, विषय-वस्तु के संगठन, शिक्षक एवं शिष्य के अभिप्रायों, शिक्षक-शिष्य के सम्बन्धों आदि पर आधारित होनी चाहिए। इनको आधार बना वाणिज्य शिक्षण में निम्नांकित विधियों का प्रयोग किया जाता है।

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ता...

व्याख्यान विधि → शिक्षण में इस विधि का प्रयो... प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है। आजकल भी भारतीय विद्यालयों मे इस विधि महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर रखा है। व्याख्यान का तात्पर्य पाठ को भाषण के रू... मे पढ़ने से है। इसमें शिक्षक अपने मुख से बात कहकर पढ़ाता है। बाइनिंग व बाइनिंग इसको कथन विधि (Telling meth... के नाम से पुकारते हैं। व्याख्यान विधि वाणिज्य के शिक्षण में अपना अद्वित... स्थान रखती है। इस विधि द्वारा शिक्षक गहन एवं सूक्ष्म विषय-वस्तु को सरल तथा सुबोध बना सकता है। इस प्रकार इसमे बच्चे की कई इन्द्रियाँ सक्रि... रह सकती हैं। दूसरे व्याख्यान वक्ता के सम्पूर्ण दायित्व के साथ बालकों के मस्तिष्क मे स्थान ग्रहण करता है।

प्रयोग → अब प्रश्न यह है कि वाणिज्य शिक्षण मे यह विधि कब प्रयुक्त की जाए। इस विषय मे यह कहा जा सकता है कि इसका प्रयोग निम्नलिखित अवसरों पर करना चाहिए-

① इसका प्रयोग किसी बड़ी इकाई या लम्बे प्रकरण या पुनर्विलोकन देने के लिए करना चाहिए।

② इसका उपयोग वाणिज्य के अधिकांश प्रकरणों में छात्रों के अध्ययन को परिपूरित करने के लिए किया जाना चाहिए।

③ व्याख्यान विधि का प्रयोग बालकों के समय की बचत के लिए भी किया जाना चाहिए।

④ किसी नवीन पाठ की प्रस्तावना से परिचित कराने के लिए भी व्याख्यान विधि का उपयोग हो सकता है।

⑤ इस विधि का प्रयोग किसी विषय या प्रकरण का सारांश देने के लिए भी किया जा सकता है।

गुण → ① व्याख्यान विधि द्वारा छात्रों में किसी भाषण को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत का निर्माण हो जाता है।

② इसके द्वारा छात्रों की अभिव्यंजना, तर्क, चिन्तन शक्तियों का भी समुचित विकास किया जाता है।

③ यह विधि ज्ञानात्मक पाठ के लिए उपयोगी है।

④ इसमें शिक्षक एवं छात्र दोनों ही सक्रिय रहते है।

⑤ इसके द्वारा ज्ञान शीघ्रता से दिया जा सकता है।

दोष → ① इस विधि के विरुद्ध यह आरोप लगाया जाता है कि यह छात्रों को निष्क्रिय श्रोता बनाती है।

② इसके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान स्थायी एवं वास्तविक नहीं होता।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, वाराणसी

सीमाएँ → ① इस विधि द्वारा शिक्षण को सजीव बनाने वाले उपकरण शिक्षण को उपलब्ध नहीं हो पाते।
② इसके द्वारा बालक की कौतूहल प्रवृत्ति की सन्तुष्टि नहीं हो पाती।
③ यह विधि रुचि के सिद्धान्त पर आधारित नहीं है।

सुझाव – ① माध्यमिक स्तर पर इसका उपयोग कम ही करना चाहिए।
② व्याख्या क्रमबद्ध होनी चाहिए।
③ व्याख्यान की भाषा तथा शैली, छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहि

योजना विधि → इस विधि के जन्मदाता श्री डब्ल्यू. एच. किलपैट्रिक (W. H. Kilpatrick) है। डीवी के प्रयोजनवाद के सिद्धान्तों के आधार पर इस विधि का वि किया गया। इसका निर्माण विद्यालय के परम्परागत एवं शुष्क वातावरण को दूर करने के लिए किया गया है। इसमें छात्रों की क्रियाशीलता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया इसमें शिक्षक परिस्थितियों के निर्माणकर्ता तथा मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता

प्रोजेक्ट का अर्थ → 'प्रोजेक्ट' शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए आगे कुछ परिभाषाएँ दी जा रही है:—

"प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है, जिसका समा उसके स्वाभाविक प्रकृत वातावरण में ही किया जाता है।" → स्टीवेन्सन

"प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन का एक छोटा-सा टुकड़ा है, जिसको विद्यालय में प्रतिपादित किया जाता है।" → बैलार्ड

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

उपर्युक्त परिभाषाओं से प्रोजेक्ट के निम्नलिखित गुण स्पष्ट होते है —

(1) प्रोजेक्ट का एक स्पष्ट उद्देश्य होता है जिसकी प्राप्ति के लिए उसको पूर्ण किया जाता है।

(2) प्रोजेक्ट मे क्रियाशीलता निहित रहती है।

(3) प्रोजेक्ट का शैक्षिक महत्व होता है।

वाणिज्य मे योजना पद्धति का प्रयोग →
वाणिज्य के शिक्षण के लिए यह विधि बहुत उपयोगी है।
इसके सफल प्रयोग के लिए क्रमशः निम्नलिखित सात स्तरो को पार करना पड़ता है —

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
प.न्हेयपुर, ... कैथा

(1) परिस्थिति उत्पन्न करना (Creation of the Situation)।

(2) योजना का चयन (Selection of the Project)।

(3) उद्देश्य - निरूपण (Purposing)

(4) योजना पूर्ण करने का कार्यक्रम (Plan Of the Project)।

(5) कार्यक्रम को क्रियान्वित करना (Execution of the Plan)।

(6) कार्य का निर्णय (Judgement of the work)।

(7) कार्य का लेखा (Recording)।

योजना → सहकारी बैंक का संचालन

योजना के प्रकार → प्रोजेक्टो का वर्गीकरण, विभिन्न विद्वानो ने विभिन्न प्रकार से किया है।

गुण → (1) बालको मे इस विधि द्वारा सतत प्रयत्नशीलता तथा रचनात्मक सक्रियता का विकास होता है।

(2) इस विधि मे स्वक्रिया पर बल दिया जाता है। छात्र इसके द्वारा स्वानुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करते है।

(3) इस विधि के प्रयोग से छात्रो मे सामाजिक गुणो, आदतो तथा अभिरुचियो का विकास होता है।

दोष एंव सीमाएँ →

(1) इस विधि द्वारा शिक्षण करने से ज्ञान खण्डो मे विभाजित करके प्रदान किया जाता है। दूसरे शब्दों मे कहा जा सकता है कि इसके द्वारा क्रम तथा तारतम्य के साथ ज्ञान प्रदान नही किया जाता।

(2) इस विधि द्वारा शिक्षण करने मे समय बहुत लगता है। वाणिज्य को इतना समय, समय तालिका मे प्राप्त नही है।

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान

समस्या - समाधान विधि → समस्या - समाधान विधि योजना विधि से पर्याप्त समानता रखती है। इन दोनों विधियों मे अन्तर इस बात का है। कि योजना विधि मे प्रायोगिक कार्य को महत्व प्रदान किया जाता है। इस प्रकार इसके द्वारा सैद्धान्तिक विवेचना नही की जाती, वरन् केवल उन्ही सिद्धान्तो का अध्ययन कराया जाता है जो कि समस्याओ के अध्ययन मे प्रसंगवश आ जाते है।

प्रयोग → इस विधि मे शिक्षक या तो स्वयं समस्या बालो को दे सकता है या बालक स्वयं प्रस्तुत कर सकते है। इसके प्रयोग मे निम्नलिखित बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए —

1. समस्या का चयन तथा उसका प्रस्तुतीकरण।
2. तथ्यो की जाँच तथा सम्भावित हलो का निर्णय।
3. समस्या का लेखा।

गुण → 1. इस विधि के प्रयोग से बालक समस्या हल करने के ढंग को सीख जाते है।
2. इससे बालकों मे स्वाध्ययन की आदत का निर्माण होता है।
3. इसके प्रयोग से बालक स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करते है।
4. इसमे वैयक्तिक विभिन्नताओं को सन्तुष्ट किया जाता है।

दोष तथा सीमाएँ → 1. यह विधि जूनियर स्तर के बालो के लिए व्यवहार्य नही है।
2. इसमे सदैव सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नही हो पाते।

③ इस विधि मे समय बहुत लगता है जबकि वाणिज्य को समय - तालिका आवश्यकतानुसार भी समय प्राप्त नहीं हो पाता है।

सुझाव → ① समस्याओ का चयन छात्रों की आर्थिक परिस्थितियों के सन्दर्भ मे करना चाहिए तथा इनके चयन मे छात्रो का परस्पर सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

② समस्याओ के हल के लिए अपेक्षित सामग्री को सुगमतापूर्वक उपलब्ध बनाना चाहिए।

③ समस्याओ के विश्लेषण एवं संश्लेषण मे छात्रों को पथ - प्रदर्शित किया जाना चाहिए तथा समस्याओं को स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत किया जाए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

"इकाई – 3"
"b"

वाणिज्य शिक्षण मे शिक्षण सहायक सामग्री →

वाणिज्य शिक्षण मे शिक्षण सहायक सामग्री निम्नलिखित है।

शिक्षण सामग्री के दो प्रमुख तत्व है –

(1) माध्यम (Medium)
(2) विधा (Mode)

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

श्रव्य-दृश्य सामग्री

श्रव्य – दृश्य सामग्री मुद्रित अथवा लिखित शब्द के अतिरिक्त वे साधन है जो वस्तु-विशेष या बिन्दु-विशेष की स्पष्ट धारणा बनाने में सहायता प्रदान करते है। अतः श्रव्य दृश्य सामग्री का अर्थ उस सामग्री से है जो कक्षा मे या अन्य शिक्षण परिस्थितियों मे लिखित या बोली गयी पाठ्य – सामग्री को समझने मे सहायता देती है।

श्रव्य-दृश्य सामग्री का वर्गीकरण → इन्द्रियों के प्रयोग पर श्रव्य दृश्य सामग्री को निम्नलिखित तीन भागों मे विभक्त किया जा सकता है –

(अ) श्रव्य सामग्री (Audio aids)
(ब) दृश्य सामग्री (Visual aids)
(स) श्रव्य – दृश्य सामग्री (Audio – visual aids)

दृश्य - श्रव्य साधनों का उपयुक्त चयन एवं प्रयोग → दृश्य - श्रव्य साधनों की प्रभावकारिता उनके उपयुक्त चयन एवं प्रयोग पर निर्भर है। इन साधनों का चयन करते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान में रखना चाहिए —

(1) साधन अध्ययन के प्रकरण से सम्बन्धित होना चाहिए।
(2) साधन छात्रों के अनुभव और उनकी समझ के उपयुक्त होने चाहिए
(3) साधन अच्छी हालत में होने चाहिए
(4) साधन ऐसा होना चाहिए जिससे छात्रों में सुरुचि विकसित हो।

(5) पाठ्य - पुस्तक → पाठ्य - पुस्तक का शैक्षणिक उपकरण के रूप में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके विषय में आगामी अध्याय में विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(6) श्यामपट या चॉक बोर्ड →
यह शिक्षा का महत्वपूर्ण उपकरण है। दुर्भाग्यवश भारत में यह सर्वाधिक उपेक्षित विद्यालय उपकरण है। विद्यालय भवनों का निर्माण करते समय कक्षा में श्यामपट के लिए पर्याप्त स्थान रखने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

श्यामपट का प्रयोग → वाणिज्य का छात्र इसका प्रयोग निम्नलिखित बातों के लिए कर सकता है —

① योजना की रूपरेखा लिखने के लिए।
② सारांश देने के लिए।
③ मुख्य निर्देश के लिए।
④ सहकार्य देने के लिए।
⑤ आर्थिक पदों की परिभाषा देने के लिए।

श्यामपट का महत्व → यद्यपि श्यामपट कोई आकर्षक वस्तु नहीं है वरन् यह काले रंग का है परन्तु जब उसका ठीक-ठीक उपयोग किया जाता है तब वह बहुत ही प्रेरणादायक हो जाता है। किसी पाठ के दौरान श्यामपट पर बनाया गया कोई निर्देश - चित्र सम्पूर्ण कक्षा के ध्यान को पाठ की ओर आकृष्ट कर सकता है। इसके प्रयोग के लिए कोई अतिरिक्त उपकरण पास रखना भी आवश्यक नहीं है। किसी फिल्म या रेडियो प्रसारण जैसे साधनों के प्रयोग में भी श्यामपट एक अनिवार्य साधन होता है।

प्राचार्य
मीरां मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पल्लेपुर, ताखा, बलिया

श्यामपट के उपयोग से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें-

① श्यामपट पर ऊपर के बाएँ कोने से लिखना प्रारम्भ करें और सीधी पंक्तियों में लिखें।
② शिक्षक श्यामपट के एक ही ओर खड़ा हो।
③ प्रतिवर्ष कम से कम एक बार श्यामपट को आवश्यक सुधारा सँवारा जाए।
④ कक्षा का कार्य प्रारम्भ होने से पहले ही श्यामपट के लिए आवश्यक सब वस्तुएँ एकत्रित कर लें।
⑤ श्यामपट पर केवल महत्वपूर्ण बातें ही लिखें। यह विस्तारपूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता।

रेखाचित्र तथा रेखाकृति →

वाणिज्य शिक्षण मे रेखाचित्रों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा मे किया जाता है। इन प्रयोग मुख्य रूप से वाणिज्यिक तथा आर्थिक भूगोल और वाणिज्यिक अर्थशास्त्र के अध्यापन मे किया जाता है। वाणिज्य शिक्षण मे रेखाचित्र चित्रों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण होते है। भिन्न रेखाचित्र तथा रेखाकृति का महत्वपूर्ण गुण है।

प्रपत्र →

वाणिज्य शिक्षण मे विभिन्न प्रकार के प्रपत्रो का प्रयोग किया जाता है। ये प्रपत्र बहीखाते (पुस्तपालन), वाणिज्य के तत्व, अधिकोषण और अन्य विषयो से सम्बन्धित होते है। छात्रों को कक्षा मे वास्तविक प्रपत्रों को दिखाया जाना चाहिए। वाणिज्य शिक्षण मे सामान्यतः विभिन्न प्रकार की बहीखाता पुस्तकों के बैंक, बीमा, रेलवे, डाकघर और रोज रोज व्यापार मे काम मे लाये जाने वाले प्रपत्रो का प्रयोग किया जा सकता है। इनकी सहायता से व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जाना सम्भव है।

31/08/2020

प्राचार्य
मीरा मैमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया